श्री राम चन्द्र मिशन®
इंडिया न्यूज़लेटर
जनवरी २००८ केवल प्राईवेट परिचालन के लिये वोल्यूम –१, इश्यू –१

प्रिय भाइयों और बहनों, प्रणाम!

श्री राम चन्द्र मिशन के इन्डिया न्यूज़लेटर के प्रथम संस्करण में आप सभी का स्वागत है। इस न्यूज़लेटर के माध्यम से आप तक पूज्य गुरुदेव के यात्रा वृत्तांत, घोषणाएँ व देश के कोने–कोने की जानकारी पहुँचाई जाएगी।

न्यूज़लेटर का प्रकाशन अंग्रेज़ी के अलावा हिंदी, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, बंगाली व गुजराती भाषा में माह में दो बार किये जाने की योजना है। अभ्यासी किसी भी भाषा में इस न्यूज़लेटर की सदस्यता ले सकते हैं। सदस्यता लेने वाले सभी अभ्यासियों को ई–मेल द्वारा न्यूज़लेटर भेजा जाएगा। न्यूज़लेटरों का संग्रह श्री राम चन्द्र मिान की वेबसाइट Http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp पर उपलब्ध होगा।

न्यूज़लेटर के प्रकाशन हेतु लेख व सामग्री भारत में स्थित सभी केंद्रों से आमंत्रित है। इसे ज़ोन प्रभारी के अनुमोदन उपरांत in.newsletter@srcm.org पर 28 फरवरी 2008 तक अवश्य भेज दें ताकि इसे मार्च में प्रकाशित किए जाने वाले संस्करण में शामिल किया जा सके।

पूज्य गुरुदेव की यूरोप यात्रा 5 से 29 दिसंबर 2007

पूज्य गुरुदेव ब्रज़ल्स, बेल्जियम की यात्रा पर 30 अभ्यासियों के साथ 5 दिसंबर 2007 को चेन्नई से रवाना हुए। मालिक ने आगमन पर होटेल के स्वागत कक्ष में 9.30 से 12.00 बजे तक इंतज़ार करके हम सभी को सहनशीलता व धैर्य का परिचय दिया।

7 दिसंबर को गुरुदेव पेरिस के लिए रवाना हुए, जहाँ हज़ारों की संख्या में अभ्यासी उनका स्वागत करने के लिए उपस्थित थे। गुरुदेव आइफल टावर के निकट स्थित अभ्यासी के अपार्टमेंट में ठहरे। पूज्य बाबूजी महाराज अपनी पेरिस यात्रा के दौरान यहीं पर ठहरे थे। तत्पश्चात उन्होंने 15 दिसंबर को सीधे व्राद्स के लिए प्रस्थान किया। यहाँ 16 विभिन्न देशों से एकत्रित हुए 900 अभ्यासियों के साथ मालिक ने 11 दिन तक मुकाम किया। व्राद्स में मालिक के क्रिसमस आगमन पर संपूर्ण वातावरण आनंदोल्लास से परिपूर्ण था। व्राद्स की ज़मीन बर्फ की चादर से ढकी हुई थी। कई अभ्यासी निकट के सिनेमा थिएटर में मालिक के साथ 'गोल्डन कंपस' देखने गए। इस दौरान मालिक ने बाबूजी महाराज के जन्मदिवस के अवसर पर क्लीव्लैंड, यू. एस. ए. आने की घोषणा की।

26 दिसंबर को व्राद्स के अभ्यासियों को भावभीनी विदाई देकर मालिक उत्तरी जर्मनी के छोटे से शहर ब्रिमन पहुँचे। ब्रिमन व अन्य स्थानीय अभ्यासियों के साथ मालिक ने विभिन्न विषयों पर अनौपचारिक बातचीत में समय बिताया। 'दिल से बात' विषय पर चर्चा के दौरान मालिक ने कहा, जर्मनी के लोग सत्य के पुजारी हैं। मेरे गुरुदेव कहा करते थे, जिस जगह भी जाओ, एक वातावरण बनाओ, वहाँ कुछ छोड़ कर जाओ, इसलिए मैं सत्य बोलूँगा तो वह सदैव आपके साथ रेगा। किसी दिन आप इस विषय पर विचार करेंगे। अतः हमारा संवाद न केवल हमारे बीच, बल्कि सभी के साथ हृदय से होना चाहिए।

27 दिसंबर को मालिक ब्रसल्स के लिये रवाना हुए और 29 दिसंबर की रात्रि को चेन्नै पहुँचे। मालिक के साथ यूरोप की यात्रा पर गए सभी अभ्यासियों के लिए इस यात्रा का संपूर्ण अनुभव भावपूर्ण व अविस्मरणीय रष। मालिक का अभ्यासियों के साथ मेलजोल, प्रेम, उनके हृदय का उद्गार था, अपने अस्तित्व के प्रति पूर्ण नकारात्मक भाव शामिल था। उनके इस संपूर्ण यात्रा का सार ग्रहण करें तो ये हमें अपने हृदय का प्रयोग करने को प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि उनके अनुसार असली ज्ञान मस्तिष्क से नहीं दिल से आता ह। अतः दिल से धैर्यपूर्वक सोचविचार कर सही बोलें और सही काम करें। जीवन में सत्य का दामन कभी न छोड़ें।

एम. एम. धनुमूर्ति, तिरुप्पूर

मणपक्कम आश्रम, चेन्नै में नव वर्ष

पूज्य मालिक 30 दिसंबर, 2007 को मध्य रात्रि 2.15 बजे ब्रसल्स का दौरा पूरा करके चेन्नै के अंतर्राष्ट्रीय टर्मिनल पर आ पहुँचे। वे लंबी यात्रा के बावज़ूद तरोताज़ा लग रहे थे। मालिक का स्वागत करने 500 अभ्यासी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय टर्मिनल पर बेसब्री से इंतज़ार करते हुए अभ्यासियों के साथ कुछ समय बिताया और फिर वे बाबूजी मेमोरियल आश्रम की ओर रवाना हुए। आश्रम में अपने प्रिय गुरुदेव के सानिध्य में नववर्ष के आगमन का स्वागत करने हेतु भारी तादाद में अभ्यासी एकत्रित थे। आश्रम में उनके स्वागत में आँखें बिछाये बैठे अभ्यासियों के साथ उन्होंने समय बिताया।

पूज्य गुरुदेव सवेरे तड़के ही लम्बी यात्रा व देर रात्रि के बावजूद उठ गए और रविवार का सत्संग करवाया। रविवार के सत्संग में करीब 3000 अभ्यासी शामिल थे। मालिक पूरे दिन व 31 दिसंबर को विभिन्न प्रशासनिक कार्यों तथा प्रशिक्षक बनाने में व्यस्त रहे। 31 दिसंबर की शाम को गुरुदेव ने 'गोल्फ कार्ट' में बैठ कर पूरे आश्रम का दौरा किया।

1 जनवरी, 2008 की सुबह गुरुदेव ने सत्संग करवाया, जिसमें 5000 अभ्यासी शामिल हुए। नववर्ष के आगमन के लिये गुरुदेव के सानिध्य का लाभ उठाने आए अभ्यासियों के हृदय गुरुदेव ने अपने प्रेम व प्राणाहुति से लबालब भर दिए तथा मणपक्कम आश्रम पर इस समय दिव्यता व आध्यात्मिकता का वातावरण उतरा हुआ था।

'सहज सन्देश' से लिए गए अंश

Rev. Master's Message for the New Year

आप सब दिन दुगुनी रात चौगुनी आध्यात्मिक उन्नत्ति करें

वे, हुक्का और मैं की सदस्यता

अभ्यासियों से प्राप्त सतत अनुरोध पर इस विशेष प्रकाशन के लिए पूज्य गुरुदेव ने सदस्यता जारी रखने की अनुमति दे दी है। जो अभ्यासी सदस्यता के इच्छुक हैं, वे क्रेडिट कार्ड से सदस्यता राशि का भुगतान करने के लिए निम्न ऑन लाइन पते पर करें : https://www.srcm.org/onlinebookstore/selectCountry_ForSubscriptions.jsp

इस विशेष प्रकाशन को हिंदी व तमिल भाषी अभ्यासियों के लाभार्थ हिंदी व तमिल भाष। में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है। जो अभ्यासी 29.02.2008 से पहले अपनी प्रति बुक करवाते हैं, उनके लिए बुकिंग राशि रु 200 निर्धारित की गई है तथा जो अभ्यासी 01.03.2008 के उपरांत प्रति बुक करवाते है, उन्हें रु 300 बुकिंग राशि देनी होगी। अभ्यासियों से अनुरोध है कि प्रकाशन के उचित प्रबंन्धन के लिए अपनी प्रतियाँ एड्वांस में बुक करवा लें।

अभ्यासी प्रकाशन समन्वयक या उनके संबंधित केंद्रो के केन्द्र प्रभारी से भी संपर्क कर सकतें है।

SERVICE

Service is easier than loving, loving is a very difficult thing. Service is very easy. Put your heart and serve somebody, you automatically get his love and his obligation to you, and he has to give you whatever he has to give you.

Taken from the book "Heart to Heart Vol 2", chapter "Questions and Answers I" , pg 162-by Chariji

पूज्य बाबूजी की 109 वें जन्मदिन की वर्षगाठं (2008)

हमें सूचित करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि, पू. बाबूजी महाराज के 109 वें जन्मदिन की वर्षगाठं पर, क्लीवलैंड, ओहायो, यू. एस. ए. में अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजन करने की घोषण। की है।

इस सेमिनार का आयोजन क्लीवलैंड फ़ेयर ग्राउंड पर किया जाएगा, यह 100 एकड क्षेत्र में फ़ैला सुरम्य स्थल है इसमें 10,000 व्यक्तियों के बैठने की सुविधा है।

क्यू. मालिक ने विश्व के समस्त अभ्यासिओं को सेमिनार में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है, यह सेमिनार 28 अप्रैल से 1 मई, 2008 तक की अवधि के लिए होगा। सेमिनार संबधित जानकारी विश्वभर में फ़ैले हुए सहज मार्ग के केन्द्रों को जनवरी के पहले सप्ताह में ईमेल द्वारा भेजी दी जाएगी।

यूथ कार्यक्रम – बाबूजी मेमोरियल आश्रम 9 वाँ बैच

हमें बताते हुए खुशी हो रही है कि, बाबूजी मेमोरियल आश्रम, मनपक्कम, चेन्नेई में 1 अप्रैल से 30 जून तक 9 वें बैच के लिए यूथ प्रोग्राम हो रहा है। इस प्रोग्राम का उद्देश्य सहज मार्ग युवाओं को आश्रम के प्रबंधन के सभी पहलुओं पर प्रशिक्षण देना है।

इस कार्यक्रम के प्रमुख बिंदु:

★ अभ्यासिओं को आश्रम के सभी पहलुओ व सहज मार्ग पद्धति पर गहन प्रशिक्षण दिया जायेगा।

★ प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि के लिऐ अभ्यासी प्रतिभागियों को आश्रम में नि:शुल्क रहने की व्यवस्था की जाएगी। आश्रम में भोजन व रहने के लिए बेचलर डार्मेट्री में व्यवस्था की जाएगी।

इस कार्यक्रम में भाग लेने की पात्रता शर्तें निम्नाप्रकार है:

★ भारत में निवास करने वाले 20 से 40 आयुवर्ग के अभ्यासी इस कार्यक्रम में भाग ले सकते है।

★ अभ्यासी को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सहज मार्ग पद्दति से ध्यान आरंभ करके दो साल पूर्ण होने चाहिए।

★ अभ्यासी ने कम से कम मिशन के भन्डाराओं/समारोहों में दो बार भाग लिया होना चाहिए।

★ अभ्यासी को ज़ोनल प्रभारि/केन्द्र प्रभारि/प्रशिक्षक द्वारा प्रमाणित आचरण पत्र प्रस्तुत करना होगा।

★ अभ्यासी आश्रम में ठहरने की अवधि में [आश्रम में उपलब्ध भोजन या आवास सुविधा के अतिरिक्त], जो कि आश्रम में कार्यक्रम के दौरान नि:शुल्क होगी, वित्तिय अथवा अन्य किसी सहायता की अपेक्ष। न करें। अभ्यासी आश्रम ठहरने के लिए पर्याप्त वस्त्र परिधान अपने साथ लाऐ व व्यक्तिगत खर्चों के लिए नक्द राशिं भी रखें।

★ अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफ़लतापूर्वक पूर्ण करें – इसके लिए आवश्यक है कि वें अनुशासित हों और मनोयोग से कार्यक्रम में भाग लें। जो अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम सफ़लतापूर्वक पूर्ण कर लेतें है तो वें; मनपक्कम आश्रम व भारतवर्ष के सभी आश्रमों में बतौर स्टाफ़ के कार्यरत हों सकतें है।

प्रशिक्षण अंग्रेजी माध्यम से दिया जायेगा। जो भाई या बहेन प्रोग्रम में भाग लेना चाहेतें हें, वें अपना आवेदन भर कर संबंधित ज़ोनल प्रभारि/केन्द्र प्रभारि/प्रशिक्षक के माध्यम से भेंजें। शार्ट–लिस्ट किए गये अभ्यासियों को उचित परख के बाद ईमेल/डाक/फोन द्वार। सूचित किया जाएगा। आवेद्न पत्र निम्नलिखित लिन्क पर उप्लब्ध है:
"http://www.srcm.org/members/ssandesh/2007/2007_12_Youth_Program_ApplicationForm.pdf"

आवेद्न पत्र भर कर निम्नलिखित पते पर भेजें जा सकतें हैं:

भाई एस. व्रकाश – आश्रम रख–रखाव प्रबंधक,
बाबूजी मेमोरियल आश्रम . श्री राम चंद्र मिशन रोड, मनपक्कम, चेन्नेई – 60016.
फोने: +९१ ४४ ४२१७ ११११/+९१ ९८४०० ९६४५४
Prakash@seechangeworld.com

मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम

सैनिक स्कूल अमरावती, तमिलनाडू के प्रिंसिपल, और पुराने छात्र के अनुरोध पर 15 व 16 दिसंबर को मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा पर दो दिन का कार्यक्रम आयोजन स्कूल के परिसर में ही किया गया।

कैंपस के सभी शिक्षकों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कर्नल जे. एच. सॅमुएल, प्रिंसिपल, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया व कहा कि प्रत्येक स्कूल में इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन समय की माँग है। प्रिंसिपल महोदय ने स्कूल में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों व इनके माध्यम से सिखाये जाने वाले मूल्यों के संदर्भ में चर्चा की तथा हमें अपने कार्यक्रमों में – प्रेरणा, तनाव–प्रबंधन, नेतृत्व,व किशोरों के चरित्र–निर्माण विषयों पर ध्यान केंद्रित करने का अनुरोध किया।

हमने शिक्षकों के लिये प्रायोगिक सत्रों का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने बड़े ही उत्साह से सक्रिय भाग लिया। इन कार्यक्रमों को शिक्षकों ने बेहद पसंद किया। स्कूल के हेड मास्टर ले. कर्नल वीर सिंह ने विदाई भाषण दिया। रजिस्ट्रार स्क्वाड्रन लीडर संजय पाटिल दोनों दिन उपस्थित थे हमें प्रतिभागियों के साथ 'मन का नियमन' व सहज मार्ग पद्धति पर बोलने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रिंसिपल ने अगले वर्ष 'ओपेन हाउस' कार्यक्रम रखने में रुचि दिखाई।

सीता कुंचितपादम, चेन्नै

मुज़फ़्फ़रपुर में प्रशिक्षण कार्यक्रम

8, दिसंबर, 2007 को मुज़फ़्फ़रपुर केंद्र में प्राथमिक ट्रैनिंग प्रोग्राम अयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बिहार और झारखंण्ड जोन के 60 अभ्यासियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की संकल्पना दक्ढफल सिद्धातों पर आधारित थी। इस कार्यक्रम का संचालन भाई डा. जी एम भटनागर और मनोज तिवारी ने किया।

साधना के विभिन्न पहलुओं पर वार्ताएं दी गई व चर्चाएं आयोजित की गई। कार्यक्रम में भाग लेने वाले अभ्यासियों ने 'साधना' विषय पर अपने अभिमत व्यक्त किए तथा प्रत्येक पहलु के महत्व को स्पष्टता से समझने का प्रयास किया। प्रत्येक सत्र, विषयों पर दिए गए प्रस्तुतिकण व विषयों पर आधारित प्रश्न–उत्तर कार्यक्रमों के कारण, अत्यंत रोचक था। यह सत्र जानकारीप्रद थे और सहज मार्ग को सही प्रकारेण समझने में सहायकसिद्द हुए।

शाम को ओपन हाउस का आयॊजन किया गया। ओपन हाउस में करीब 30 व्यक्तियों ने भाग लिया। इसमें सहज मार्ग के विभिन्न चर्चाएं व प्रश्न–उत्तर सत्र अयोजित किए गए।

9 दिसंबर को युथ ट्रैनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया जिसका संचालन भाई विजय कुमार ने किया। इन कार्यक्रमों के आयोजक का मुख्य उद्देश्य युवा व हृदय से युवा अभ्यासियों को मिशन के कार्यों में हाथ बंटाना व आदर्श अभ्यासी बनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना था।

कार्यक्रम का प्रथम सत्र में मालिक की युवाओं से अपेक्षा ? तत्पश्चात साधना के पथ पर युवाओं की समस्याएं और समाधान विषय पर चर्चाएं हुईं। दूसरे सत्र में युवाओं के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत व इन पर अमल विषय पर भाई अजय कुमार ने व्याख्यान दिए और युवाओं के लिए साहित्य के चुनाव में

सुझाव विषय पर भाई ब्रजेश बरनवाल ने विचार व्यक्त किए। दिन के अगले पहर में एक ग्रुप परिचर्चा अयोजित की गई, इसका विषय था हम अपना व्यक्तिगत अभ्यास कैसें करें तथा इन कार्यक्रमों के उपरांत हम अपने केंद्रों पर क्या गतिविधियां करें। चर्चाओं के उपरांत, प्रत्येक ग्रुप के प्रतिनिधि ने चर्चाओं का सार–संक्षेप प्रस्तुत किया। दिन का आखिरी कार्यक्रम एक सांस्कृतिक कार्यक्रम था, जिसे मुजफ़्फ़रपुर केंद्र के बाल कलाकारों ने तैयार व प्रस्तुत किया।

अभ्यासियों ने मत प्रकट किया की इस तरह के कार्यक्रम समय–समय पर किए जाने चाहिएं क्योंकी यह अभ्यासी के साधना के मार्ग को प्रशस्त करने का अवसर प्रदान करतें हैं।

आंध्र प्रदेश ओपन हाउस

विभिन्न केंद्रों के विकास को गति देने के लिए ओपन हाउस और अभ्यासी मेल–मिलाप को बढावा दिया जाना चाहिए।

भोंगिर केंद्र पर 23 अगस्त, 2007 को ओपन हाउस अयोजित किया गया। इस केंद्र की स्थापना इस वर्ष के आरंभ में की गई। अब इस केंद्र में 100 सक्रिय अभ्यासी हैं। हैदराबाद के प्रशिक्षक और भाई बिख्शम ने ओपन हाउस का संचालन किया, जिसमें 200 लोग उपस्थित थे तथा 20 लोगों ने प्रारंभिक सिटिंग ली। इस बात की कल्पना करना भी मुश्किल है कि इस स्थान पर एक वर्षपूर्व कोई भी अभ्यासी नही था।

ओपन हाउस के कई सत्र नागार्जुन सागर, बापटला के कृषि युनिवर्सिटी, होम साईंस कालेज एण्ड इंन्जिनियरिंग कालेज, मइद्कुर के स्टाफ़ और विधार्थियों के लिए, कड्डुपा स्थित इंन्जिनियरिंग कालेज के स्टाफ़ और विधार्थियों के लिए, कड्डुपा व प्रोद्दुतुर स्थित प्रोविडेंट फ़ंड आफ़िस तथा हैदराबाद स्थित एच. ए. एल. के स्टाफ़ और एच. ए. ई. एल के डिग्री कालेज विधार्थियों लिए अयोजित किए गए।

कृपा की पात्रता हेतु सेवा करें

मैसुर में 3–4 नवंबर को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सेवा अध्यात्मिक प्रगति के लिए सुनिश्चित व शार्टकट मार्ग है, सेवा से ही अभ्यासी उनकी कृपा प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त करता ह विषय पर प्रशिक्षण दिया गया व इस संदेश को पहुचाने का प्रयत्न किया गया। तदनुसार कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित थे:

★ सेवा के महत्व को समझना और सेवा के विभिन्न पहलुओं को जानना

★ सेवा में टीमवर्क की संकलपना को समझना

★ मिशन में उपलब्ध सेवा के विभिन्न अवसरों को समझना तथा इनमें भागीदारी के भिन्न तरिकों से अवगत होना

कार्यक्रमों में विभिन्न केन्द्रों जैसे मैसुर, हनसुर, के. र. नगर, ननजनगुड, कोलेगल, ह्न्नुर, चामराज नगर तथा टी. नरसीपुर. से 125 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए, बेंग्लुरु व मैसुर के अभ्यासियों द्वारा संचालित किए गए कार्यक्रम का शूभारंभ ध्यान से हुआ। तत्पश्चात एकत्रित प्रतिभागियों का प्रशिक्षण के उद्देश्यों से अवगत कराया गया। इसके बाद अभ्यासियों के द्ल बना दिये गए व उन्हें टीम वर्क पर विचार–विमर्श करने व चर्चा करने को कहा गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए पारस्परिक क्रीडाएं रखीं गईं। प्रतिभागियों को इस अयोजन से सेवा प्रक्रिया, टीम वर्क, तथा संगठित प्रयासों का महत्व, इसकी चुन्नौतियां व इन चुन्नौतियों का सामना करने के तरीकों को समझने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन सेवा से जुडे विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई, जैसे की सेवा की आवश्यकता, स्वंय–सेवक का आचार–व्यवहार कार्य–नीति और स्वंयसेवी द्लों की देखभाल व सहायता करने नें प्रशिक्षकों/कार्यकर्ता की भुमिका। प्रत्येक द्ल के प्रतिनिधि ने चर्चाओं का सत्र समाप्त होने पर 'विषय प्रसतुतिकरण' दिए।

ल्ात्पश्चात, अभ्यासियों ने मास्टर, मिश्न और मेथड विषय पर आधारित क्विझ कार्यक्रम मे भाग लिया। इसके उपरांत मिश्न समबंधित गतिविधियाओं जैसे, ट्रैनिंग, वी. बी. एस. ई. और पूर्ण दिवसिय कार्यक्रमओं पर 'विषय प्रसतुतिकरण' हुए ।। प्रोग्राम का समापन सायंकालिक सत्संग से हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में अभ्यासियों ने मास्टर, मिशन, और पद्धति विषयों पर आधारित प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में भाग लिया। तत्पश्चात, मिशन की गतिविधियों नामतः प्रशिक्षण कार्यक्रम, ओपेन हाऊस, वॅल्यू बेस्ड आधात्मिक शिक्षा और पूर्ण दिवसीय कार्यक्रमों पर प्रस्तुति कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग से हुआ।

भाई डा. कृष्णमूर्ति

बाल केंद्र, बेंगलूरू

पारिवारिक समृद्धि, सामंजस्य व शांति में बच्चों की अहम भूमिका है। बच्चों की किलकारियों व बाल–सुलभ मस्ती हमारे जीवन में उल्लास का रंग भरती है। बच्चे न केवल परिवार का भविष्य हैं, वे मानव जाति का भी भविष्य होते हैं। उनके विकास और वृद्धि में योगदान देकर हम मानव जाति के भविष्य का निर्माण कर रहे हैं। – श्री पी. राजगोपालाचारी

बेंगलूरू का बाल–केंद्र अभ्यासियों के बच्चों के लिए सुरक्षित व महफूज़ वातावरण सुनिष्चित करता है तथा उनके अभिभावक अपने नन्हें–मुन्नों को बाल केंद्र में भेज कर निश्चिंत होकर ध्यान व मिशन की गतिविधियों में भाग लेते हैं।

चिल्ड्रन–सेंटर की गतिविधियों की योजना बनाने व इन्हें सुचारु ढंग से चलाने के लिए रविवार सत्संग में एक कार्यक्रम संचालक व वॉलंटियर की ड्यूटी पारी–पारी से लगाने की योजना तैयार की गई। उनकी समय–सारणी तीन महीने पहले ही प्रकाशित की जाती है। संयोजक को उनके अनुभव व रुचि के अनुसार गतिविधियों की योजना बनाने एवं तैयारी करने का पूर्णाधिकार प्राप्त है। स्वयं सेवक इन बच्चों के लिए आदर्श व्यक्ति सिद्ध हों, इस बात को कार्य करते हुए ध्यान में रखा जाए, इसे महत्व दिया गया है।

बच्चों के लिए 'चिल्ड्रन कॉर्नर' बनाने की अवधारणा बच्चों को सही दिशा देने में कारगर सिद्ध होगी क्योंकि बच्चों को विभिन्न क्रिया कलापों जैसे कथा–कथन, गुड़िया बनाना, कठपुतली का नाच, प्रश्नोत्तरी, नाटक, चित्रकारी, पठन आदि में व्यस्त रखने के अलावा इन में रुचि जाग्रत करने में भी ज़ोर दिया जाता है। संयोजकों को एन गतिविधियों की तैयारी के लिये 8 से 10 सप्ताह का समय दिया जाता है तथा वे समय से पूर्व तैयारी करके नयी गतिविधियों को करने के लिये उत्साहित रहते हैं। इससे उनको नियत समय में आवश्यकतानुसार बदलाव लाने का भी समय मिल जाता है। अतः स्वयंसेवक को नियमित रूप से सत्संग में भाग लेने का अवसर मिल पाता है। स्वयंसेवक का अपने कार्य के प्रति अनावश्यक लगाव उत्पन्न न हो, यह भी सुनिश्चित किया जा सकता है। इन गतिविधियों के सुचारु रूप से चलाने में जो प्रारंभिक कठिनाइयाँ सामने आईं, उनका समाधान करके संयोजक / स्वयंसेवक नी गतिविधियों को आरंभ करने के लिये नए उत्साह व आत्म–विश्वास के साथ तैयार हैं।

इन केंद्रों पर बच्चों के विकास के लिए अनुकूल व सामंजस्यपूर्ण वातावरण व स्वयंसेवक द्वारा किए गए प्रयासों को देखते हुए कई अभिभावक स्वयंसेवकों का हाथ बंटाने के लिए स्वयं आगे आए हैं व स्वयंसेवक बनने की इच्छा भी ज़ाहिर की है। हालाँकि इन गतिविधियों को चलाने में प्रारंभिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, स्वयंसेवक व आश्रम के कार्यकर्ताओं के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप इन्हें तुरंत सुलझाया गया व इनमें परिवर्तन करके भविष्य में पुनः न उत्पन्न होने के लिए कारगार कदम उठाए गए।

प्रभाकर रावूरी, बेंगलूरू

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम – इन्दौर केन्द्र

इन्दौर आश्रम मे 28 से 30 दिसंबर 2007 तक आवसीय अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण अवधि के दौरान मध्यप्रदेश के विभिन्न केंद्रों से 90 अभ्यासी आश्रम परिसर मे एकत्रित थे। प्रशिक्षण कार्य्क्रम में विभिन्न गतिविधियों का समावेश किया गया था जिसमे दैनिक साधना, सहज मार्ग साधना के विभिन्न पहलुओं पर औपचारिक चर्चाएँ, सामूहिक विचार–विमर्श, प्रश्नोत्तर सत्र और मिशन के साहित्य का पठन आदि शामिल थे।

प्रशिक्षण अवधि के दौरान पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शी सिद्धान्तों पर आधारित साधना अभ्यास पर विशेष ज़ोर दिया गया।

प्रशिक्षण दौरान प्रत्याशित रुप से अभ्यासियो में साधना को लगन और नियमित रुप से करने का उत्साह व रुचि जागृत हुई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तिम दिन कुछ प्रतिभागियों ने अपने अनुभव बाँटे। संपूर्ण प्रशिक्षण अवधि में मालिक की कृपा व उपस्थिति को महसूस किया गया।

भाई अविनाश कर्मकर और भाई राजेश रावरेकर, इन्दौर

गुजरात प्रशिक्षण कार्यक्रम

सहज मार्ग पद्धत्ति से ध्यान आरंभ किए हुए जिन अभ्यासियों को २ साल से अधिक समय हुआ है उनके लिए प्रत्येक मास केदूसरे सप्ताह में हिंदी व गुजराती में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना निश्चित किया गया है। यह कार्यक्रम संपूर्ण गुजरात ज़ोन के लिए अहमदाबाद–अदालज आश्रम में आयोजित किया जाता है।

पू. मालिक के अनुसार इन कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिभागियों में छुपी प्रतिभा ढुंढना और परख कर उन्हे तराश कर मिशन के लिये उपयोगी बनाना है।

गुजराती में हाल ही में आयोजित कार्यक्रम शनिवार सुबह ८ बजे आरंभ होकर रविवार सायं ४ बजे समाप्त हुआ। प्रशिक्षणार्थ ४० अभ्यासियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण की नियोजित गतिविधियाँ भिन्न–भिन्न तरीकों से पारस्परिक विचार आदान–प्रदान पर बल देती थीं। इससे अभ्यासियों को आपस में खुलकर अपने विचारों को सभी के साथ बाँटने के लिए प्रोत्साहन मिला। "मैं मिशन के प्रगति के लिए क्या कर सकता हूँ" जैसे कई विषयों पर गहन चर्चाएँ हुई व अभ्यासियों ने अनुप्राणित करने वाले विचार अभिव्यक्त किए। प्रतिभागी गुटों ने विभिन्न आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित नाटक भी पेश किए।

प्रशिक्षण के दौरान एक सत्र का अयोजन किया गया जिसमें अभ्यासी गुट के किसी एक अभ्यासी को "मालिक से पहली मुलाकात के बाद आए परिवर्तन" विषय पर बोलने पर आमंत्रित किया गया। इन वर्ताओं के दौरान पू. मालिक की उपस्थिति का सभी को अनुभव हुआ।

"नये जिज्ञासियों को सहज मार्ग पद्धति से कैसे परिचित करवाया जाय" और "साधना को नियमित रूप से करने का महत्व" जैसे कई विषय थे जिनपर प्रशिक्षण संचालकों ने मास्टर, मिशन और पद्धति को स्पष्ट रुप से समझाने के लिए जीवन–सजीव अनुभवों को उद्धरित किया।

प्रशिक्षण संकाय में निम्न अभ्यासी शामिल थे: भाई सुरेश राजगोपालन, तार चौहान, जीगनेश शेलाट, डा. विनोद अग्रवाल, डा. सुरेंद्र अग्रवाल, हिरेन शाह, भाविन पटेल, हर्ष चौहान, राजेन्द्र राठोड, विलास भोंडे तथा समित पटेल।

एक सत्र, जिसमें एक वस्तु को आधार बनाकर उसके आद्यात्मिक मूल्यों को उजागर और प्रस्तुति करण करना था, का अयोजन हुआ। यह सत्र आध्यात्मिक प्रबोधन करने वाले सिद्ध हुए।

शनिवार रात को, कैम्प फ़ायर तथा प्रतिभागियों द्वारा गायन व मोनो– ऐक्टींग, प्रतिभागियों में भाई–चारे और बंधुत्व की भावना सुदृढ़ करने मे मददगार साबित हुआ।

प्रशिक्षण दौरान अयोजित चार सामुहिक सत्संग अपने तरीके से विषेश थे। इन सत्संगों द्वारा रचा गया वातावरण अभ्यासियों के अंदर आध्यात्मिक तड़प पैदा करने में सहायक सिद्ध होता है। हम इन कार्यक्रमों के सुपरिणामों के प्रति आशक्त हैं जो कि २४ जुलाई, २००९ को बडोदा में होने वाले उत्सव के लिए सक्षम तथा निष्ठावान अभ्यासियों की टीम तैयार करने में मददगार होगें।

© 2008 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This message may be edited for content and is intended exclusively for the members of SRCM.
The views expressed herein are not necessarily those of SRCM.
Privacy Statement: http://www.srcm.org/members/privacypolicy.jsp